प्रेम और इश्क़

الحب والعشق

[हिन्दी - Hindi - هندي]

मुहम्मद सालेह अल-मुनज्जिद

अनुवादः अताउर्रहमान ज़ियाउल्लाह

2010 - 1431

islamhouse.com

﴿ الحب والعشق ﴾

« باللغة الهندية »

محمد صالح المنجد

ترجمة: عطاء الرحمن ضياء الله

2010 - 1431

islamhouse.com

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

मैं अति मेहरबान और दयालु अल्लाह के नाम से आरम्भ करता हूँ।

إن الحمد لله نحمده ونستعينه ونستغفره، ونعوذ بالله من شرور أنفسنا، وسيئات أعمالنا، من يهده الله فلا مضل له، ومن يضلل فلا هادي له، وبعد:

हर प्रकार की हम्द व सना (प्रशंसा और गुणगान) अल्लाह के लिए योग्य है, हम उसी की प्रशंसा करते हैं, उसी से मदद मांगते और उसी से क्षमा याचना करते हैं, तथा हम अपने नफ्स की बुराई और अपने बुरे कामों से अल्लाह की पनाह में आते हैं, जिसे अल्लाह तआला हिदायत दे दे उसे कोई पथभ्रष्ट (गुमराह) करने वाला नहीं, और जिसे गुमराह कर दे उसे कोई हिदायत देने वाला नहीं। हम्द व सना के बाद :

प्रेम और इश्क़

प्रश्नः

क्या अगर कोई लड़की किसी लड़के से दूर से प्यार करती है तो उस ने पाप किया है ?

उत्तरः

हर प्रकाम की प्रशंसा और गुणगान अल्लाह के लिए योग्य है।

इस्लामी शरीअत ने बुराई और पाप के दरवाजों (स्रोतों) से मना किया है, और दिलों औ बुद्वियों के भ्रष्ट करने वाले हर साधन को बंद करने का

इच्छुक और लालायित है, तथा इश्क़, प्यार, स्नेह और दो लिंगों के बीच लगाव सब से गंभीर बीमारियों और सब से खतरनाक महामारियों में से है।

शैखुल इस्लाम इब्ने तैमिय्या ''मजमूउल फतावा'' (10/129) में फरमाते हैं कि :

''इश्क़ एक मानसिक रोग है, जब वह शक्ति पूर्ण हो जाता है तो शरीर को प्रभावित करता है, और शरीर के अंदर एक रोग बन जाता है : या तो वह मस्तिष्क की बीमारियों में से है, इसीलिए उस के बारे में कहा गया है कि वह एक वस्वसा की बीमारी है, और या तो वह शरीर की बीमारियों में से है जैसे कि कमज़ोरी और दुर्बलता इत्यादि।'' (इब्ने तैमिय्या की बात समाप्त हुई)

तथा आप रहिमहुल्लाह ''मजमूउल फतावा'' (10/132) में एक दूसरे स्थान पर फरमाते हैं कि :

''अजनबी औरत से इश्क़ और प्यार में इतनी खराबियाँ और भ्रष्टाचार हैं जिन की गणना केवल मानव जाति का यहोवा ही कर सकता है, वह उन बीमारियों में से है जो आदमी के धर्म को नष्ट कर देती है, फिर उस की बुद्धि और उस के शरीर को नष्ट कर देती है।'' (इब्ने तैमिय्या की बात समाप्त हुई).

और हमारे लिए यह जानना काफी है कि विपरीत लिंग के साथ इश्क़ और प्यार के हानिकारक प्रभावों (और नुक़सानात) में से यह है कि उस का दिल उस की प्रेमिका का बंदी और गुलाम बन जाता है, अतः प्यार दीनता, दरिद्रता और थकान का द्वार है, और इस रोग से घृणा दिलाने के लिए इतना काफी है।

इब्ने तैमिय्या रहिमहुल्लाह ''मजमूउल फतावा'' (10/185) में कहते हैं किः

''जब आदमी का दिल किसी औरत से लग जाता है, तो भले ही वह औरत उसके लिए वैध हो, परन्तु उस का दिल उस औरत का बन्दी बना रहता है, वह उस पर नियंत्रण करती है और जिस तरह चाहती है उस के साथ व्यवहार करती है, वह देखने में तो उस का स्वामी होता है क्योंकि वह उस का पति है, परन्तु वास्तव में वह उस का बंदी और दास होता है, विशेष कर यदि उस औरत को यह पता चल जाये की वह पुरूष उस का मुहताज है और उस से प्यार करता है, तो ऐसी स्थिति में वह उस पर ऐसे ही नियंत्रण रखती है जिस तरह कि एक प्रचण्ड अत्याचारी स्वामी अपने उत्पीड़ित दास पर नियंत्रण रखता है जो उस से मुक्ति प्राप्त करने की शक्ति नहीं रखता है, बल्कि इस से भी कहीं बढ़ कर कठोर व्यवहार करती है, क्योंकि दिल का बंदी होना शरीर के बंदी होने से कहीं बढ़ कर है, और दिल को गुलाम बनाना शरीर को गुलाम बनाने से अधिक गंभीर है।'' (इब्ने तैमिय्या की बात समाप्त हुई)।

विपरीत लिंग से लगाव उस दिल को प्रभावित नहीं करता है जो सर्व शक्तिमान अल्लाह के प्यार से भरा हुआ हो, बल्कि वह केवल उसी दिल को प्रभावित करता है जो खाली, कमज़ोर और नत मस्तक हो, चुनाँचि वह उस पर अधिकार जमा लेता है, फिर जब वह शक्तिशाली और मज़बूत हो जात है तो कभी कभार अल्लाह तआला की महब्बत पर भी गालि आ जाता है और उस आदमी को शिर्क तक निकाल पहुँचाता है।

इसीलिए कहा गया है कि : मन की इच्छा और आकांक्षा (खाहिशे नफ्स) खाली दिल की हरकत का नाम है।

जब दिल सर्व शक्तिमान अति दयावान अल्लाह की महब्बत और उस के ज़िक्र (स्मरण), तथा उस की गुण गाथा और कीर्तन और उस के वार्तालाप (कलाम) से आनंदित होने से रिक्त होता है, तो औरतों के अनुराग, चित्रों के लगाव, और संगीत के श्रवण से भर जाता है।

शैखुल इस्लाम इब्ने तैमिय्या रहिमहुल्लाह ''मजमूउल फतावा'' (10/135) में फरमाते हैं :

''जब दिल केवल अल्लाह तआला से प्यार करने वाला उसी के लिए धर्म निष्ठा को खालिस (विशिष्ट) करने वाला होता है, तो उस के अलावा किसी अन्य की महब्बत से कदापि ग्रस्त नहीं होता है, किसी के इश्क़ से ग्रस्त होना तो बहुत दूर की बात है। और जहाँ भी वह किसी के इश्क़ से पीड़ित हुआ, तो यह उस के एक मात्र अल्लाह की महब्बत में कमी के कारण हुआ है ; यही कारण है कि जब यूसुफ अलैहिस्सलाम अल्लाह से महब्बत करने वाले और धर्म निष्ठा को उसी के लिए खालिस करने वाले थे, तो वह इस से ग्रस्त नहीं हुये, बल्कि अल्लाह तआला ने फरमाया है कि :

﴿ كَذَٰلِكَ لِنَصۡرِفَ عَنۡهُ ٱلسُّوٓءَ وَٱلۡفَحۡشَآءَۚ إِنَّهُۥ مِنۡ عِبَادِنَا ٱلۡمُخۡلَصِينَ ٢٤ ﴾

[يوسف: ٢٤]

''ऐसे ही हुआ ताकि हम उन से बुराई और अनैतिकता और अश्लीलता (बेहयाई) को हटा दें, निः सन्देह वह हमारे मनोनीत बन्दों में से थे।'' (सूरत यूसुफ : 24)

इस के विपरीत (मिस्र के) अज़ीज़ (अर्थात् शासक) की पत्नी और उस की क़ौम मुश्रिक थी, इसी कारण वह इश्क़ से ग्रस्त होगई।'' (इब्ने तैमिय्या की बात समाप्त हुई).

अतः मुसलामन पर अनिवार्य है कि वह अपने आप को इस भयस्थान से सुरक्षित रखे, और उस की रक्षा करने और उसे बचाने में कोताही से काम न ले, यदि उस ने इस विषय में कोताही की और सदैव हराम चीज़ को देख कर (हराम निगाही), हराम चीज़ को सुन कर, और विपरीत लिंग से बात चीत करने इत्यादि में सहजता से काम लेकर इश्क बाज़ी (आशिक़ी) का रास्त अपनाया, फिर वह प्यार, या अनुराग (इश्क़) से ग्रस्त हो गया, तो वह दोषी और पापी है उसे उस के इस कृत्य पर सज़ा मिलेगी।

कितने ऐसे लोग हैं जिन्हों ने इस रोग (प्रेम रोग) के शुरूआत और प्रारंभिक चीज़ों में सहजता और सुस्ती से काम लिया, और यह भ्रम किया कि वह जब चाहे अपने आप को उस से बचाने पर सक्षम है, या वह एक सीमा पर रूक जायेगा उस से आगे नहीं बढ़ेगा, यहाँ तक कि जब उस (प्रेम) रोग ने उस पर अधिकार जमा लिया, तो फिर उस के साथ कोई चिकित्सक और कोई दवा सफल नहीं हो सकी, जैसाकि किसी कहने वाले न कहा है कि :

उस ने प्यार (इश्क़) की मनोकामना की यहाँ तक कि इश्क़ से ग्रस्त हो गया फिर जब वह उस पर सवार और हावी होगया तो वह उस से उपेक्षा करने पर सक्षम नहीं रहा।

उस ने एक गहरा कुंड देखा तो उसे एक लहर समझा, जब वह उस में कूद पड़ा तो डूब गया।

इब्नुल क़ैयिम रहिमहुल्लाह ''रौज़तुल मुहिब्बीन'' (पृ. 147) में कहते हैं कि :

''जब भी कोई कारण आदमी की अपनी पसंद और अधिकार से घटित होगा तो उस के परिणाम स्वरूप उस की पसंद औ इच्छा के बिना उत्पन्न होने वाली चीज़ में वह मा'जूर (क्षम्य) नहीं समझा जायेगा, इसीलिए जब कारण निषिद्ध था तो नशा ग्रस्त आदमी को मा'जूर (क्षमा के योग्य) नहीं समझा गया। और इस में कोई सन्देह नहीं कि बार बार नज़र लड़ाना और निरंतर उस के बारे में सोचना मादक पदार्थ पीने के समान है, अतः उसे कारण पर निंदित किया जायेगा।'' (इब्नुल क़ैयिम की बात समाप्त हुई)

अतः यदि वह हस खतरनाक रोग के द्वार (कारणों और स्रोतों) से दूर रहने का इच्छुक और लालायित रहा, चुनाँचि उस ने हराम चीज़ों को देखने से अपनी दृष्टि को सुरक्षित रखा, अपने कानों को उस के सुनने से बंद कर लिया, और अपने दिल को उन ख्यालात और कल्पनाओं को जिन्हें शैतान उस में डालता रहता है हटा दिया और फेर लिया, फिर अगर इस के बाद, एक सरसरी नज़र के कारण या किसी मामले की वजह से जो वास्तव में वैध था और उस के कारण वश उस का दिल किसी महिला से लग गया, और उसे इस बीमारी की चिंगारियों में से कोई चीज़ पहुँच गई तो इन शा अल्लाह इस में उस पर कोई गुनाह नहीं है, क्योंकि अल्लाह तआला का फरमान है :

﴿ لَا يُكَلِّفُ ٱللَّهُ نَفۡسًا إِلَّا وُسۡعَهَاۚ ﴾ [البقرة: ٢٨٦]

''**अल्लाह तआला किसी नफ्स (प्राणी) पर उसकी क्षमता से अधिक भार नहीं डालता।**'' (सूरतुल बक्रा : 286)

शैखुल इस्लाम इब्ने तैमिय्या रहिमहुल्लाह ''मजमूउल फतावा'' (11/10) में फरमाते हैं :

''यदि उस से कोई कोताही और आक्रामकता (अत्याचार) नहीं हुई है, तो जिस चीज़ से वह ग्रस्त हुआ है उस में वह दोषी नहीं होगा।'' (इब्ने तैमिय्या की बात समाप्त हुई).

तथा इब्नुल क़ैयिम रहिमहुल्लाह ''रौज़तुल मुहिब्बीन''(पृ. 147) में फरमाते हैं कि :

''अगर किसी ऐसे कारण से जो निषिद्ध नहीं है कोई आदमी इश्क में पड़ जाता है तो उस पर उसे निंदित नहीं किया जायेगा (दोषी नहीं ठहराया जोयगा), जैसे कि कोई आदमी अपनी पत्नी या लौण्डी से इश्क़ करता था फिर उसे अलग कर दिया और उस का इश्क़ (उस के दिल में) बाक़ी रहा उस से अलग नहीं हुआ, तो ऐसे आदमी को उस पर दोषी नहीं ठहराया जायेगा, इसी प्रकार यह भी है कि अगर उस की किसी पर अचानक नज़र पड़ी फिर उस ने तुरन्त अपनी नज़र फेर ली और उस की इच्छा और अधिकार के बिना उस के दिल में इश्क़ ने अधिकार जमा लिया। परन्तु उसे चाहिए कि उस का निवारण करे और उसे हटाने का प्रयास करे।'' (इब्नुल क़ैयिम की बात समाप्त हुई).

किन्तु उस पर अनिवार्य है कि वह उस प्रियतम के चिन्ह से अलग थलग होकर, और अल्लाह तआना की महब्बत से दिल को भर कर और उस के द्वारा निस्पृहता (बेनियाज़ी) से अपने दिल का उपचार करे, तथा ईमानदार, भरोसेमंद और बुद्धिमान शुभचिंतक लोगों से परामर्श लेने में शर्म न करे, या कुछ डॉक्टरों और मनोचिकित्सा विशेषज्ञों और परामर्शदाताओं से संपर्क करे, हो सकता है कि उन के पास उसे कोई

उपचार मिल जाये, तथा वह इस बारे में धैर्य से काम लेते हुए और (अल्लाह तआला से अज्र व सवाब और) पुरस्कार की आशा रखते हुए संयम और सतीत्व (पाकदामनी) का प्रदर्शन करे और उसे (अर्थात् अपने इश्क़ के मामले को) गुप्त रखे, और अल्लाह सुब्हानहु व तआला इन शा अल्लाह उस के लिए अज्र व सवाब लिखेगा।

शैखुल इस्लाम इब्ने तैमिय्या रहिमहुल्लाह ''मजमूउल फतावा'' (10/133) में फरमाते हैं :

''किन्तु अगर वह इश्क़ से ग्रस्त हो गया और संयम एंव सतीत्व से काम लिया और धैर्य का प्रदर्शन किया, तो वह अपने अल्लाह से डरने पर बदला (पुण्य) से पुरस्कृत किया जायेगा, क्योंकि शरीअत के प्रमाणों से यह बात सर्वज्ञात है कि अगर उस ने हराम चीज़ों को देखने, बोलने और करने से बचाव किया और इसे गुप्त रखा ज़ुबान पर नहीं लाया ताकि इस में कहीं कोई हराम बात न हो जाये, जैसे कि लोगों से शिकायत करना, या अश्लीलता का प्रदर्शन, या किसी प्रकार की प्रेमिका की चाहत न पैदा हो, और अल्लाह तआला के आज्ञा पालन पर और उस की अवज्ञा से बचाव पर, और अपने दिल में पैदा होने वाले इश्क़ के दर्द पर धैर्य करता रहे, जिस तरह कि किसी आपदा से ग्रस्त आदमी आपदा से पहुँचने वाले कष्ट और दर्द पर धैर्य करता है, तो ऐसा आदमी अल्लाह तआला से डरने और धैर्य (सब्र) करने वालों में से है :

﴿ إِنَّهُۥ مَن يَتَّقِ وَيَصۡبِرۡ فَإِنَّ ٱللَّهَ لَا يُضِيعُ أَجۡرَ ٱلۡمُحۡسِنِينَ ٩٠ ﴾ [يوسف: ٩٠]

"निःसन्देह जो भी तक़्वा (परहेज़गारी और आत्म संयम) से काम ले और सब्र (धैर्य) करे, तो अल्लाह तआला किसी सत्यकर्म करने वाले के अज्र (बदला) को नष्ट नहीं करता है।" (सूरत यूसुफ : 90)

(इब्ने तैमिय्या की बात समाप्त हुई)

तथा प्रश्न संख्या (20949) और (33702) भी देखिए।

और अल्लाह तआला ही सर्व श्रेष्ठ ज्ञान रखता है।

इस्लाम प्रश्न और उत्तर